ISSN 2319-9407
www.yuvasamvad.org
www.yuvasamvad.com

नव निर्माण के लिए

युवा संवाद

नवम्बर 2022 अंक-237 मूल्य - 30 रुपये

धर्मनिरपेक्षता एवं भारतीय संविधान

कौन कर रहा है हिन्दुओं को बदनाम?

बिल्किस बानो

1

बहुत सी कहानियां है
जिन्हें पढ़ा जा सकता है

लेकिन कुछ कहानियां ऐसी हैं
जिन्हें पढ़ना क्षरित होते जाना है

हम भीतर ही भीतर गलने लगते हैं
खून हमारी धातु में जमने लगता हैं

हम सच बोलना चाहते हैं
मगर यह दुस्साहस नहीं बचता कि
अपने आप को बचाया जा सके

हम बचे रहने की जुगत में
बचे रहना चाहते हैं
फ़िर भी हम नहीं बचते
इसलिए कि
अपराधबोध की ख़ामोशी
अंदर के शैतान को जन्म दे रही होती है

हमारी कोशिश समाज के
उस अनटाइप्ड ढांचे में फिट होने की है
जिसमें मुर्दे भी शांति से रह नहीं पाते
ज़िदों के बीच

2

हम सिर्फ़ झूठ से नहीं मारे जाते
अधिक हत्या सच से मुंह मोड़ने में होती है

3

क्या तुम जानते हो
एक औरत पिछले कई बरसों से
इस पृथ्वी पर भटक रही है
यह कोई देश निकाला नहीं
ना ही समाज से च्युत किए जाने की कोई सजा

वह ऐसी पीड़िता है
जिसका कोई घर नहीं
कोई मुल्क नहीं

वह पिछले बीस बरसों से
दिन-रात के अंधेरे में
कपास के मसले और धुनके जाने को
इस सब्र से सुन रही है मानो यातना के घनीभूत क्षणों में
चटांग मारता यह संगीत
उसकी पीड़ा को मुलायम बना रहा है

हम समझते हैं यह उसका दुख है
जबकि
नष्ट होने की कला उसने
आसानी से सीख ली है
या उसे सीखा दी गई है

जब वह लोगों के भीतर
अपनी ज़िन्दगी के नृशंस पन्ने खोल रही होती है
आपबीती रख रही है
एक रुई की तरह फूंक दी जाती है

4

ऐसे समय में जब पहाड़
साफ दिखाई देने लगे है

नदी किनारों पर
रेत की तरह धुल चुकी है

लालटेन रात के
अंतिम पहर काट रही है

मगर वह उजाले में
अंधेरे की तरह भटक रही है
बंद कमरे और कपड़ों में
इस तरह घबरा उठती है
जैसे ढेरों हाथ उसकी पीठ
और छाती पर रेंग रहे हैं

वह भीतर कुछ नहीं दोहराती
बस खुद को दीवार हो जाने तक देखती रहती है

युवा संवाद

वर्ष: 19 ■ अंक: 237 ■ नवम्बर, 2022

प्रकाशन एवं संपादन पूर्णतया अवैतनिक

संपादक मंडल

प्रो. कमल नयन काबरा
अरुण कुमार त्रिपाठी
अनिल चमड़िया
योगेन्द्र
अशोक भारत

संपादक

ए. के. अरुण

कला संपादक

संजीव शाश्वती

संपादकीय एवं प्रबंध कार्यालय

167ए / जी.एच.2

पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063

फोन – 7303608800

ईमेल : ysamvad@gmail.com

यह प्रति	: 30 रु.
सदस्यता की दरें	
वार्षिक	: 300 रु. (व्यक्तिगत)
	: 360 रु. (संस्थागत)
पांच वर्ष	: 1200 रु.
दस वर्ष	: 2000 रु.
आजीवन	: 3000 रु.
विदेशों में	: 200 यूएस डॉलर (पांच साल के लिए)

पत्रिका के लिये सहयोग राशि 'युवा संवाद' के नाम बैंक ड्राफ्ट/चैक से युवा संवाद 167ए/जी.एच.–2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 को भेजें। दिल्ली से बाहर के चैक के साथ 50 रु. और जोड़ें। सदस्यता राशि सीधे युवा संवाद के अकाउंट संख्या **028805003109** आई.सी.आई.सी.आई., नई दिल्ली के खाते में भी सीधे जमा कराई जा सकती है। बैंक का **IFSC CODE ICIC0000288** है। राशि जमा कराने के बाद अपना नाम व पूरा पता डाक पिनकोड सहित मोबाइल नं. **09868809602** पर अवश्य एस.एम.एस. करें।

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी डॉ. ए. के. अरुण, द्वारा मर्करी प्रिंटर्स, 602, गली जूते वाली, चूड़ीवालान, दिल्ली–06 से मुद्रित एवं उन्हीं के द्वारा 167ए/जी.एच. 2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित।

संपादक – ए. के. अरुण

RNI NO. : DELHIN/2003 / 9929

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

युवा संवाद से सम्बन्धित किसी भी विवाद का निपटारा दिल्ली की सक्षम अदालत में ही सम्भव होगा।

इस अंक में

यह जो बिहार है	: राजनैतिक धुरखेल	*डॉ. योगेन्द्र*	7
संविधान	: धर्मनिरपेक्षता एवं भारतीय संविधान	*व्यास जी*	8
हिंदुत्व	: हिंदुओं को कौन बदनाम कर रहा है?	*प्रियदर्शन*	14
विरासत	: गंगा–जमुनी संस्कृति ताकत है हमारी	*विश्वनाथ सचदेव*	17
राजस्थान	: कांग्रेस, व्यक्ति और संगठन के प्रश्न	*अरुण माहेश्वरी*	19
कश्मीर	: यासीन मलिक की खिड़की से	*प्रताप भानु मेहता*	21
आरएसएस	: चेहरा ये बदल जायेगा ?	*स्वदेश कु. सिन्हा*	23
बलात्कार	: छोटे कपड़े, बलात्कार और पुरुष...	*कनकलता*	27
पर्यावरण	: हिमाचल को डराएगा मानसून ?	*गगनदीप सिंह*	33
हिमालय	: एकीकृत वैज्ञानिक अध्ययनों और...	*अतुल सती*	35
नफरत	: एक पुराने मुल्क के नए औरंगजेब	*प्रियदर्शन*	37
आजादी के 75 साल	: अमृतकाल में विषपान की लालसा	*अरुण कु. त्रिपाठी*	39
फिल्म	: गांधी फिल्म निर्माण की स्मृतियाँ	*रिचर्ड एटनबरो*	44
बेबाक	: जय श्री हरि	*सहीराम*	49

स्थाई स्तंभ

पाठक संवाद:	4–5
संपादकीय :	6

वेब : www.yuvasamvad.org www.yuvasamvad.com

गांधी के आगे लाचार नफरती लोग

जिन लोगों को चित्रकारी नहीं आती, उन्हें अगर गांधीजी का चित्र बनाने कहा जाए, तो वे गोल चश्मे, बिना बालों के सिर और एक लाठी की तस्वीर बनाकर गांधीजी को चित्रित कर ही देंगे। क्योंकि ये तीनों ही गांधीजी की पहचान के साथ चस्पा हो गए हैं, ठीक वैसे ही जैसे सत्य और अहिंसा के सिद्धांत गांधीवाद की खास पहचान हैं। लेकिन अखिल भारतीय हिंदू महासभा की पश्चिम बंगाल प्रदेश इकाई के कार्यकारी अध्यक्ष चंद्रचूड़ गोस्वामी का कहना है कि एक सिर पर बिना बालों वाले और चश्मा पहने हुए व्यक्ति गांधी हों, जरूरी नहीं। श्री गोस्वामी यह सफाई दुर्गा पंडाल में महिषासुर की जगह गांधीजी जैसे दिखने वाली मूर्ति को लगाने पर दे रहे थे।

दरअसल कोलकाता में अखिल भारतीय हिंदू महासभा पूजा के आयोजकों की ओर से दुर्गा पूजा पंडाल में देवी की भव्य प्रतिमा के नीचे एक असुर की जगह पर सिर मुंडे और चश्मा पहने बुजुर्ग व्यक्ति की मूर्ति थी। मूर्ति में जो चेहरा बनाया गया वह बापू जैसी ही दिख रहा था। एक बच्चे से भी अगर किसी राक्षस को चित्रित करने कहें तो वह विशालकाय, लाल आंखों, और भयावह मुख मुद्रा का चेहरा बनाएगा। लेकिन हिंदू महासभा के पदाधिकारी मासूम सफाई पेश कर रहे थे कि असुर के हाथों में एक ढाल है। गांधी ने कभी ढाल नहीं रखा। यह संयोग ही है कि हमारा 'असुर' जिसका मां दुर्गा संहार कर रही हैं, वह गांधी जैसा दिखता है। साथ ही में उन्होंने ये भी कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका के लिए उनकी आलोचना की जानी चाहिए। बहरहाल, महिषासुर की जगह गांधीजी जैसी मूर्ति बनाने पर सभी दलों ने कड़ी आलोचना की और राजनैतिक विवाद बढ़ा तो अब रातों रात मूर्ति की आंखों से चश्मा हटा कर चेहरे पर मूंछ लगा दी गई और सिर पर नकली बाल लगा दिए गए।

मूर्ति की सूरत तो बदल गई, लेकिन देश में राष्ट्रपिता के खिलाफ जो सोच और नफरत लोगों के मन में भर दी गई है, वह कैसे बदलेगी, यह इस वक्त का यक्ष प्रश्न है। गांधी जयंती और पुण्यतिथि दोनों ही तारीखों पर ऐसी घटनाएं होने लगी हैं, जिन्हें पहले महापाप की तरह देखा जाता था। बापू से नफरत करने वाले लोग तो इस देश में हमेशा से रहे हैं, लेकिन उस नफरत का सरेआम इजहार करना और उसे बढ़ावा देना, यह पिछले कुछ सालों का चलन है। इन बीते सालों में अल्पसंख्यकों से देशभक्ति के कई प्रमाण मांगे गए या उन्हें पाकिस्तान जाने की नसीहत दी गई, राष्ट्रवाद के उन्माद में सांप्रदायिक सद्भाव के ताने–बाने को ध्वस्त किया गया, इतिहास की नए सिरे से व्याख्या और पुनर्लेखन किया गया, स्वाधीनता संग्राम के महापुरुषों पर हक जताने का सिलसिला भी खूब चला, लेकिन जिन मूल्यों के लिए और जिन मूल्यों के साथ आजादी की लड़ाई लड़ी गई, उन्हें बड़ी चालाकी से दरकिनार किया गया।

आजादी महज अंग्रेजी राज का भारत में खात्मा नहीं था, बल्कि इसका मकसद लोकतंत्र, समानता, बंधुत्व और उदारता के मूल्यों के साथ एक नए राष्ट्र का निर्माण भी था। धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिक सद्भाव की महान भारतीय परंपरा को फिर से स्थापित करना आजादी की लड़ाई का उद्देश्य था। हिंदुस्तान के हरेक नागरिक को बराबरी और सम्मान के साथ रहने का अवसर मिले, इसे सच्ची आजादी माना गया था। गांधीजी इन्हीं मूल्यों के साथ चलते थे और अपने आंदोलनों में इन्हीं को नींव बनाते थे। वे किसी से अपना अनुयायी बनने नहीं कहते थे, न ही किसी को अपनी जीवनशैली अपनाने कहते थे। लेकिन जो लोग उनके साथ चलें वे इन्हीं मूल्यों को मानें और सत्य–अहिंसा के सिद्धांत पर चलें, यह गांधीजी जरूर चाहते थे। इसलिए चौरी–चौरा कांड के बाद गांधीजी ने तेजी से सफल हो रहे असहयोग आंदोलन को खत्म कर दिया, क्योंकि हिंसा की उनके आंदोलन में कोई जगह नहीं थी। इसी तरह जब सारा देश आजादी की खुशियां मना रहा था, तो गांधीजी नोआखाली की दंगाग्रस्त गलियों में घूम रहे थे। गांधीजी की नैतिक शक्ति और आत्मबल के कारण उनकी विचारधारा से पूरी तरह सहमत न होने वाले सुभाषचंद्र बोस और भगत सिंह जैसे अमर स्वाधीनता सेनानियों ने हमेशा उनका सम्मान किया। लेकिन आज के भारत में खुद को नेताजी और भगत सिंह के अनुयायी बताने वाले चंद लोग गांधीजी का न केवल अपमान करने पर तुले हैं, बल्कि उनका बस चले तो वे बार–बार गांधीजी की हत्या कर दें।

बीते कुछ समय में धर्म संसद के मंच से गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे का महिममंडन किया गया। गांधीजी की मूर्ति को गोली मारकर उनकी हत्या का दृश्य दोहराने का आनंद लिया गया। गोडसे और उसके साथियों की प्रतिमा लगाकर जयघोष किया गया। संसद के भीतर भी गोडसे का नाम लिया गया और अब उन्हें असुर की जगह दिखाया गया। ये सारे काम कायदे से देशद्रोह की श्रेणी में आने चाहिए, क्योंकि राष्ट्रपिता के हत्यारे का साथ देने वाले देशद्रोही ही कहे जाएंगे। मगर इस वक्त देशद्रोह और देशप्रेम दोनों नए सिरे से परिभाषित हो चुके हैं। लेकिन याद रहे कि आज भले ही गांधी के हत्यारों की पूजा का युग आ गया हो, दुनिया अब भी गोडसे नहीं, गांधी के सिद्धांतों को महान मानती है। दुनिया के कई देशों में गांधीजी की मूर्तियां हैं, कई देशों ने उन पर डाक टिकट जारी की है और संयुक्त राष्ट्र सिद्धांत 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस मनाता है। यह सारे काम इस बात का सबूत हैं कि दुनिया सत्य, अहिंसा, करुणा, दया जैसे सिद्धांतों के बल पर कायम रहेगी, नफरत से केवल उसका खात्मा होगा।

गांधीजी के सिद्धांतों के आगे नफरत के सौदागर खुद को लाचार महसूस करते हैं, इसलिए उनकी एक बार हत्या के बाद बार–बार उन्हें मारने की कोशिश करते हैं, मगर उन्हें वैचारिक तौर पर मार नहीं पाते। उनकी यह लाचारगी तब तक बनी रहेगी, जब तक वे नफरत का कारोबार करते रहेंगे। ❐

5

यह मृत समय की पंक्तियां हैं

अट्टहास करते दरिंदें बाहर फूल मालाओं से सुशोभित हो रहे

हवा कड़वी हो चली
इंसान एक दूसरे से अथाह नफ़रत में लगे हैं

आलम यह है कि
खुश होने वाले
हत्या और बलात्कार में भी
फितरत से बाज नहीं आते

मौके बे मौके
अपनी स्खलित नपुंसकता की
वासना उंडेलते है

सचमुच
अब सिर्फ़ घृणाएं बची रह गई है

6

न्याय वाले हाथों में
खंजर को बचाने के लिए
इस्तेमाल किया गया रूमाल है

जैसे सबूत मांगे जाते है
रूमाल ढंक दिया जाता है

जैसे कोई सच कहता है
मार दिया जाता है

7.

कई घर बदलने के बाद
किसी घर की पहचान नहीं बची थी

जब भी कोई घर का ठिकाना पूछता
वह सहम कर आसमान देखती

कभी कभी वह मिट्टी को इस तरह छूती
कि उसे कोई अंतर समझ नहीं आता

उसे अच्छे से सिर्फ़ आँसू
याद रहते हैं

उन्नाव, हाथरस, कठुआ और ऐसी अनेक दर्दमंद जगहों की
अनकही शिनाख्ते शेष है
जहां बिल्किस नहीं मरी

तुम बार बार दोहराते हो
उसके ज़ख्म को कुरेदते हो

हां मैं बिल्किस हूं
दर्द की अलिखित दास्तान

हर औरत के ऊपर हुए अत्याचार की भोगी

मेरी पीठ भेड़ियों के पंजे
और हुक्काम के कोड़ों से घायल है

मेरा शरीर मर चुका है
आत्मा घायल

दुनिया में जितना मलहम है
घाव उससे ज्यादा

हिंदुस्तान की बेटी
इस मिट्टी की में रची पगी हूँ

अपराधियों की रिहाई

मैं डर रही हूं
उसी जगह पहुंच गई हूं
जहां से लौटना मुमकिन नहीं

मेरा इंसाफ़ मृतकों के साथ
दफ़न कर दिया गया है

तुम स्वागत करो
या रैलियों में नारेबाजी

तुम हमेशा एक औरत के गुनहगार रहोगे
तुम्हारी कोई रिहाई नहीं

— **नीलोत्पल**

RNI NO. : DELHIN/2003/9929
POSTAL REGD. NO. : DL(W) 10/2010/2021-2023
Date of Publishing : 26 Oct., 2022, Date of Posting : 2 & 3 Nov., 2022. Posting at The Post Master, NIEHO, New Delhi-110028, Total 52 Pages

आज़ादी का अमृत महोत्सव

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India

इको फ्रेंडली बनकर ड्राइव कीजिए

यूनियन ग्रीन माइल्स लोन

इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए

आकर्षक ब्याज दर

कोई प्रोसेसिंग प्रभार नहीं

अनुच्छेद 80ईईबी के अंतर्गत टैक्स में ₹1.5 लाख तक की छूट

रजिस्ट्रेशन और रोड टैक्स में 100%* तक की छूट

*नियम व शर्तें लागू.

राज्य सरकार की ओर से ₹2.5* लाख तक का अनुदान

ऋण आवेदन की सरल, सहज एवं सुविधाजनक प्रक्रिया 9619333333 पर एक मिस्ड कॉल दीजिए या एसएमएस कीजिए <ULOAN> को 56161 पर

www.unionbankofindia.co.in | हमें यहाँ फॉलो करें | टोल फ्री नं. : 1800 22 2244 और 1800 208 2244

कार्यालय : 167ए/जी.एच.2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063